International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 02-08-2023, Accepted: 18-08-2023, Published: 04-09-2023
Volume 9, Issue 5, 2023, Page No. 6-8

भारतेंदु का उदय और प्रभाव

सुषमा सिन्हा
असिस्टेंट प्रोफेसर, विभाग हिन्दी, हिंदी विद्यापीठ, बी.एड कॉलेज, झारखंड, भारत

सारांश
सन 1850 (संवत् 1907) मैं भारतेंदु हरिश्चंद्र का जन्म हुआ। भारतेंदु केवल 35 वर्ष जीवित रहे। माघ कृष्ण पक्ष संवत 1942 (सन् 1885) में इनकी मृत्यु हो गई। इतने अल्प समय में शायद ही किसी अन्य व्यक्ति ने इतना बड़ा साहित्य कार्य किया। इनकी अपूर्व प्रतिभा ने हिंदी भाषा और हिंदी साहित्य दोनों को प्रभावित किया। केवल 15 वर्ष की अवस्था में इनका परिचय बंगाल के उठते हुए साहित्य से हुआ।। 17 वर्ष की अवस्था में उन्होंनेष्कवि वचन सुधाश्नाम की एक पत्रिका निकाली। सन 1873 में "हरिश्चंद्र मैगजीन" और फिर दूसरी पत्रिका निकली। इस पत्रिका में हरिश्चंद्र का परिमार्जित हिंदी दर्शन पहली बार प्रकाशित हुआ। भारतेंदु ने अनेक नाटकों की रचना की और वास्तव में इस क्षेत्र में उनकी प्रतिभा का सर्वोत्तम उपयोग हुआ। नाटकों के माध्यम से ही उन्होंने देश भक्ति और भगवत भक्ति का संदेश घर–घर पहुंचाया। ईसा के 19वीं शताब्दी संसार के इतिहास को नई दिशा में मोड़ने वाली शताब्दी रही है। इसी स्थिति में एक नवीन विचारधारा का जन्म हुआ जिसे राष्ट्रीयता कहते हैं। राष्ट्रीयता भारतवर्ष के लिए नवीन विश्वास थी। धीरे–धीरे ख्वाबों में नाटकों में उपन्यासों में तथा अन्य साहित्यिक रचनाओं में भारतवर्ष की पराधीनता और भारत का शोषण इस प्रकार प्रकट होने लगा, जिसमें साहित्यकारों के हृदय की व्यथा बड़ी व्याकुलता के साथ प्रकट हुई। भारत वासियों में अपने देश के प्रति प्रेम का भाव जागृत हुआ स्वाभिमान की मात्रा बढ़ती गई। काव्य और साहित्य क्षेत्र में से भारतेंदु जैसा सुयोग्यनेता प्राप्त हुआ। अकृत्रिम सहृदयता, निरंतर जागरूक दानशीलता और निश्छल सहज भाव ने उन्हें अपने युग का श्रेष्ठ साहित्यिक नेता बना दिया।

मूल शब्दः अपूर्व प्रतिभा, जीवन दर्शन, परिमार्जित, राष्ट्रीयता, साहित्यिक

भारतेंदु हरिश्चंद्र की प्रेरणादायक व्यक्तित्व ने हिंदी में सवतोमुखी उन्नति का सूत्रपात किया। 19वीं शताब्दी के समाप्त होते होते हिंदी साहित्य में शक्तिशाली भाषा के सभी लक्षण प्रकट हो गए। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भारतेंदु हरिश्चंद्र के रचना काल को दृ ष्टि में रख कर। इस अवधि को। नई धारा अथवा प्रथम उत्थान की संज्ञा दी है। इस काल को भारतेंदु और उनके सहयोगी लेखको के कृतित्व से समृद्ध माना गया है। इस युग में जनचेतना पुनर्जागरण की भावना से अनुप्राणित हो रही थी।

भारतेंदु हरिश्चंद्र का जन्म सन 18 50 में और उनका देहावसान सन 18 सो 85 में होना माना गया है। भारतेंदु केवल 35 वर्ष जीवित रहे। इतने अंत समय में शायद ही किसी व्यक्ति ने इतना बड़ा साहित्य कार्य किया हो। इनकी अपूर्व प्रतिभा ने हिंदी भाषा और हिंदी साहित्य दोनों को प्रभावित किया। केवल 15 वर्ष की अवस्था में अपने परिवार के साथ ही जगन्नाथ धाम गए। इस यात्रा में उनका परिचय बंगाल के उगते हुए साहित्य से हुआ। उस समय बंगाल में जीवन दर्शन से परिचित हो चुका था। बंगाल के सामाजिक जीवन में नवीन शैली की हलचल दिखाई देने लगी थी और साहित्य में विभिन्न अंगों की रचना होने लगी थी। इस नवीन जागृति को देखकर भारतेंदु बहुत प्रभावित हुए और हिंदी में अभी तक नवयुग का आरंभ नहीं हुआ है ऐसा अनुभव करने लगे। घर लौट कर केवल 17 वर्ष की अवस्था में उन्होंने कवि वचन सुधा नाम की पत्रिका निकाली। पहले तो इसमें केवल प्राचीन कवियों की कविताएं प्रकाशित होती थी किंतु बाद में गधे के लेख निबंध भी स्थान प्राप्त करने लगे। सन 18 से 73 में हरिश्चंद्र मैगजीन आम की दूसरी पत्रिका निकली। इसकी 8 संख्याएं प्रकाशित होने के पश्चात इस पत्रिका का नाम बदलकर हरिश्चंद्र चंद्रिका कर दिया गया इस पत्रिका में हरिश्चंद्र का परिमार्जित हिंदी दर्शन पहली बार प्रकाशित हुआ भारतेंदु हरिश्चंद्र से स्वीकार किया कि सन 18 से 73 ईसवी से हिंदी नहीं चांदनी चली नहीं सर से भारतीयों का तात्पर्य था कि इस समय उन्होंने जिस भाषा की नीव डाली उसमें किसी प्रकार का बंधन नहीं था। इसके अतिरिक्त हिंदी किसी प्रकार के कृत्रिम रूप से घड़ी गई थी। वास्तव में भारतेंदु हरिश्चंद्र ने तथा उनके सहयोगी ने जिस प्रकार की भाषा में अपने नवीन निबंध तथा ग्रंथ लिखे वह बहुत स्वाभाविक तथा भाव को प्रकाशित करने में सक्षम भाषा थी। हरिश्चंद्र चंद्रिका में ऐसे अनेक निबंध प्रकाशित हुए जिस का आदर दीर्घकाल तक होता रहा। मुंशी ज्वाला प्रसाद का कबीर आज की सभा मुंशी तोताराम का अद्भुत अपूर्व स्वप्न बाबू काशी प्रसाद का रेल का विकट खेल और आदि निबंध बहुत लोकप्रिय हुए। स्वयं भारतेंदु विरचित निबंध पांचवा पैगंबर भी अत्यधिक पसंद किया गया। भारतेंदु ने अनेक नाटकों की रचना की और वास्तव में इसी क्षेत्र में उनकी प्रतिभा का सर्वोत्तम उपयोग हुआ। नाटकों के माध्यम से ही उन्होंने देश भक्ति और भागवत शक्ति का संदेश घर–घर पहुंचाया।

ईशा की 19वीं शताब्दी संसार के इतिहास को नई दिशा में मोड़ने वाली शताब्दी रही है। नाना प्रकार के वैज्ञानिक आविष्कारों ने इस शताब्दी में यूरोप को जड़ विज्ञान का प्रेमी बताया। बड़े–बड़े कारखाने खुले दूर–दूर के देशों में व्यापारिक संबंध बड़े और पूंजी क्रमश 80 मरती है व्यापारिक व के घरों में पूंजी भूत होने लगी। राज कार्य प्रधान रूप से राजकीय घरानों जमींदारों के नियंत्रण में था धीरे–धीरे व्यवसाई भर में अनुभव किया कि राज सत्ता पर अधिकार जमाए बिना व्यापार दुनिया में नहीं चलाया जा सकता और हीरो की सर्वत्र राजतंत्र के विरुद्ध विद्रोह हुआ। ऐसी परिस्थिति में इस नवीन विचारधारा का जन्म हुआ जिसे राष्ट्रीयता कहते हैं यूरोप में जन्मे विचारधारा ने धीरे–धीरे भारत के विचार सिर्फ लोगों को ही प्रभावित करना आरंभ किया राष्ट्रीयता भारतवर्ष के नवीन विश्वास थी। राष्ट्रीयता का किया था कि प्रत्येक व्यक्ति राष्ट् का अंश है और प्रत्येक नागरिक को राष्ट्र की सेवा के लिए सभी प्रकार के त्याग और कष्ट स्वीकार करना चाहिए। यह राष्ट्रीयता एक सीमा तक मनुष्य के उच्चतर उद्देश्यों के अनुरूप थी सीमा का अतिक्रमण करने के पश्चात इसका एक अत्यंत उचित रूप सामने आया वह यह कि अपने देश को धन

धन से समृद्ध बनाने के लिए दूसरे देशों का शोषण किया जा सकता है। राष्ट्रीयता ने 19वीं शताब्दी में जब विकृत रूप धारण कर लिया था। 19वीं शताब्दी के अपराध में पढ़े–लिखे भारतीय स्वार्थ को समझने लगे थे। धीरे–धीरे काव्य में नाटकों में उपन्यासों में तथा अन्यान्य साहित्यिक रचनाओं में भारतवर्ष की पराधीनता और भारत का शोषण इस प्रकार प्रकट होने लगा जिससे साहित्यकारों के हृदय की व्यथा बड़ी प्राथमिकता के साथ प्रकट हुई भारत वासियों ने भी अपने देश के प्रति प्रेम का भाव जागृत हुआ और स्वाभिमान की मात्रा बढ़ती गई। देशभक्ति परोपकार भावना मातृभाषा के प्रति प्रेम समाज सुधार और पराधीनता के बंधन से मुक्ति उन दिनों के प्रगतिशील मनोवृति के प्रमाण है धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र में यह कार्य समाज के रूप में प्रकट हो चुकी थी।

काव्य और साहित्य के क्षेत्र में से भारतीय हिंदू जैसा स्त्रियों के नेता प्राप्त हुआ भारतीयों के पहले ही कविता में इसके बीच दिखाई देने लगे थे भारतेंदु के आने के बाद इस दिशा में बहुत तेजी से प्रगति हुई इस प्रकृति का कारण भारतीयों का अद्भुत व्यक्तित्व था। उनमें कुछ अनन्य साधारण गुण थे। इस प्रगति का कारण भारतेंदु का अद्भुत व्यक्तित्व था उन दिनों के लगभग सभी वरिष्ठ साहित्यकार भारतेंदु को केंद्र बनाकर क्रियाशील हुए।

व्यक्तित्व और कृतित्व

भारतेंदु का पूर्वर्ती काव्य साहित्य संतों की कुटिया से निकलकर राजा और रईसों के दरबार में पहुंच गया था दूसरी और कवियों की दुनिया राज दरबारों की ओर खींच गई भारतेंदु ने कवियों को इन दोनों ही प्रकार की अधोगति यों के पथ से उबारा। एक और भाभी को फिर से भक्ति के पवित्र मंदाकिनी में स्नान कराया और दूसरी और उसे दरबारी पन से निकालकर लोकजीवन की आमने सामने खड़ा कर दिया। नाटकों में तो उन्होंने युगांतर उपस्थित कर दिया जो एक बड़े भारी परिवर्तन का संकेत करते हैं। रीतिकाल में नाटक लिखा जाना एकदम बंद हो गया था जनजीवन बंधे बंधाए मार्ग पर चल रहा था नवीनता को अपराध माना जाता था। भारतेंदु ने इसे बड़ी चतुराई से तोडा उन्होंने मृदु संशोधक निपुण वेद की भांति रोग की नाजुक स्थिति की ठीक–ठीक जानकारी प्राप्त करके उसे उचित पथ्य देने की व्यवस्था की। उन्होंने संस्कृत के साथ बंगला मराठी आदि पार्षद वर्तनी भाषाओं से प्रेरणा लेने में हिचक अनुभव नहीं किया। भारतेंदु जीवन प्राणधारा के मूर्त विग्रह थे। उनकी सफलता का प्रधान रहस्य है अपूर्व दान शीलता। यहां का शीलता का अर्थ रुपया पैसा लौटाने से नहीं अपना सर्वोत्तम लुटाने से है। भारतेंदु की अपूर्व मातृत्व शक्ति ने उनके इर्द–गिर्द महान साहित्यकारों को खींच लिया था इस माह सूर्य को ढेर कर दी अभिमान ग्रह मंडली स्वयं उपस्थित हो गई थी। भाषा बदध अवस्था से मुक्त अवस्था में आ गई थी। भारतीय दो और उनके सहयोगियों ने अपने आपको देखकर हर बाधा को दूर कर दिया। काव्य नाटक उपन्यास और निबंध आदि प्राणशक्ति से ही आगे बढ़ने लगे बीसवीं शताब्दी के आरंभ से इसकी गति में बड़ी तीव्रता आ गई। इसे सुनाए कहानी शक्तिशाली महापुरुष का आविर्भाव हुआ जिस भाषा में नहीं सकती अनिवार्य कर दी। यह थे आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी। जो व्यक्ति सहज होता है वही महान होता है उसकी सहज सरसता उसकी बहुत बड़ी संपत्ति है जो उसके संपर्क में आने वाले को भी महान बनाती है। इन महान गुणों ने भारतेंदु को अपने युग का महान नेता बना दिया।

सामाजिक एवं साहित्यिक चेतना

उस समय राजनीतिक प्रभुत्व तो नाम को भी नहीं बची थी आर्थिक स्थिति अत्यंत चिंताजनक थी। भारतवर्ष के अधिकांश नागरिक उन दिनों में प्रदेश की अधोगति का मूल कारण भी नहीं समझ पा रहे थे। इस देश में राष्ट्रीयता नाम की वस्तु से सभी अपरिचित थे। जिन थोड़े भारतीयों ने इस प्रस्तुति को समझा था उन्हें भारतीय हिंदू का स्थान प्रमुख था। उनमें एक विचित्र प्रकार की अंतर्दृष्टि तथा सहज बोध था जिससे वह किसी भी समस्या का समाधान समझ जाते थे। भारतेंदु हरिश्चंद्र के प्रेरणादायक व्यक्तित्व में हिंदी में सर्वतोमुखी उन्नति का सूत्रपात किया। 19वीं शताब्दी के समाप्त होते होते हिंदी साहित्य में शक्तिशाली भाषा के सभी लक्षण प्रकट हो गए। इस समय थकान एक अच्छे पत्र पत्रिका में प्रकाशित होने लगी थी विविध विषयों पर पुस्तकें भी लिखी जा चुकी थी भाषा के प्रश्नों को भारतेंदु ने आज से 100 वर्ष से भी पहले सूक्ष्मता से समझ लिया था। अपनी भाषा की उन्नति को सभी उन्नति ओं का मूल कारण होने की घोषणा भारतेंदु ने की थी–

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
पै निज भाषा ज्ञान बिनु, मिटे न हिय को सूल।

भाषा हमारी संस्कृति का प्रतीक है। उसको मूल समस्या स्वीकार करना चाहिए। भारतेंदु ने हिंदी अथवा किसी विशेष भाषा का नाम ना ले कर निज भाषा अर्थात अपनी भाषा शब्द का व्यवहार किया। स्पीकर भारतेंदु ने समस्त विश्व के निवासियों को उन्नति का मूल कारण बताया।

हिंदी का जन आंदोलन–भारतेंदु हरिश्चंद्र का प्रभाव भाषा के प्रचार क्षेत्र में बहुत व्यापक रहा। 19वीं शताब्दी ईस्वी के अंत में भाषा के संबंध में लोकमत को सचेत करने के लिए जिस प्रकार के उद्योग हुए वे हिंदी भाषा के इतिहास में एकदम नये थे। भाषा के प्रति इस प्रकार की जागरूकता का हेतु भाषा के आंदोलन को राष्ट्रीय रूप प्रदान करना था। इस प्रतिक्रिया का कारण हिंदी भाषा का भयंकर उपेक्षा थी। भारतेंदु हरिश्चंद्र की प्रेरणा ने हिंदी भाषा के आंदोलन को वास्तविक जन आंदोलन का रूप दे दिया इसी जन आंदोलन में हिंदी को जन भाषा बनाने की ओर बराबर उन्मुख बनाए रखा। यह जल संश्रय का ही परिणाम था कि निरंतर उपेक्षित और अपमानित होते रहने पर भी हिंदी आज सर्वोच्च गौरव की अधिकारिणी बनी है। हिंदी की शक्ति जनता की शक्ति है। भारतीय जी की प्रेरणा से ही हिंदी जन भाषा बनी। डॉ त्रिभुवन सिंह ने अपने हिंदी साहित्य एक परिचय में लिखा है–साहित्य रुको की अनेकता से अधिक महत्वपूर्ण होती है–यूग की आत्मा। वह चाहे पद्य के रूप में अभिव्यक्त हो चाहे गद्य के रूप में आकार ग्रहण करें।

भारत की भाषाएं कला और संस्कृति वास्तव में भारत को एक अतुल्य भारत बनाती है। भारत संस्कृति का समृद्ध भंडार है जो हमेशा से यहां की कला साहित्यिक कृतियों प्रथाओं परंपराओं भाषा अभिव्यक्ति ओ तथा सांस्कृतिक धरोहरों में परिलक्षित होता है। भारत की सांस्कृतिक संपदा का संरक्षण संवर्धन एवं प्रसार हमारी उच्चतम प्राथमिकता होनी चाहिए क्योंकि यह देश की पहचान के साथ–साथ अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण है। इससे बच्चों में अपनी भाषा संस्कृति कला एवं परंपरा के प्रति आत्मसम्मान का भाव निर्मित होगा। संस्कृति के प्रसार का प्रथम मध्यम कला है और भाषा निसंदेह कला एवं संस्कृति का प्रतिबिंब है। कला व संस्कृति के संरक्षण संवर्धन विकास एवं प्रसार के लिए हमें उससे जुड़ी भाषाओं का संरक्षण संवर्धन करना होगा। दुर्भाग्य से देश में भारतीय भाषाओं की समुचित देखभाल नहीं होने से देश में विगत 50 वर्षों में ही 220 भाषाओं को खो दिया। यूनेस्को ने 197 भारतीय भाषाओं को लुप्त प्राय घोषित किया है। ऐसे में शिक्षण एवं अधिगम के स्तर पर स्कूली एवं उच्च शिक्षा में भारतीय भाषा को एकत्रित करने की जरूरत है शिक्षा एवं शोध को पुनर्जीवित करने एवं देश में ऐसे विभिन्न संस्थाओं के विस्तार के संबंध में शिक्षा मंत्रालय द्वारा गठित समिति भारतीय भाषाओं

के प्रोत्साहन के लिए स्कूली एवं उच्च शिक्षा के स्तर पर भारतीय भाषाओं के अध्ययन को बेहतर बनाने और उसके बहुआयामी विकास का रास्ता दिखाएगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कहा गया है कि भाषा हमारी कला और संस्कृति से अटूट रूप से जुड़ी है। खतरे की श्रेणी में आने वाले गैर अनुसूचित जनजातियां एवं शास्त्रीय भाषाओं सहित सभी श्रेणियों के भाषाओं का ध्यान रखना आवश्यक है उक्त समिति भाषा शिक्षा पठन–पाठन भाषा अध्यापक शिक्षा को लेकर तथा अनुवाद कौशल विकास सहित अन्य विषयों पर भी विचार करेगी। भाषा से जुड़े छात्रों के लिए रोजगार के अवसर को बेहतर बनाने तथा छात्र केंद्रित गतिविधियों के संबंध में नवोन्मेष प्रकोष्ठ तथा भारतीय ज्ञान प्रणाली के साथ समन्वय करेगी। आज स्वतंत्रता के बाद भी भारत के कई प्रांत अगम एवं जनजातियों का प्रदेश बना हुआ है अपनी बहुरंगी जीवन शैली तथा रीति रिवाज लोक कला के माध्यम से भी अपनी विशेष पहचान रखते हैं। स्कूली स्तर पर संगीत कला और हंस कौशल पर बल देना बहुभाषिकता को प्रोत्साहित करने के लिए क्रियान्वयन जल्द हो। उत्कृष्ट विशिष्ट प्रशिक्षक भाषाई, सृजनात्मक कलात्मक सांस्कृतिक आयामों के लिए स्कूल से जोड़े जाएं। यहां प्रत्येक राज्य की लोक कला एवं संस्कृति अत्यधिक व्यापक एवं संपन्न है इन्हें बढ़ावा देने के लिए आवश्यक है कि साहित्य एवं लोक कला का अध्ययन अधिकतर लोक संस्कृति के परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए। भारतीय भाषाओं कला और संस्कृति की उन्नति में यह महत्वपूर्ण योगदान होगा।

निष्कर्ष

ईशा की 19वीं शताब्दी संसार के इतिहास को नई दिशा में बोलने वाली शताब्दी रही है। राजतंत्र के विरुद्ध विद्रोह हुआ धीरे–धीरे प्रजातंत्र का प्रभाव बढ़ता गया। ऐसी परिस्थिति में नवीन विचारधारा राष्ट्रीयता का जन्म हुआ। साहित्य क्षेत्र में भारतेंदु जैसा सुयोग्य नेता प्राप्त हुआ। भारतेंदु के आने के बाद इस दिशा में बहुत तेजी से प्रगति हुई। इस प्रगति का करण भारतेंदु का अद्भुत व्यक्तित्व था उनमें कुछ अनन्य साधारण गुण थे। उन दिनों के लगभग सभी श्रेष्ठ साहित्यकार भारतेंदु को केंद्र बनाकर क्रियाशील हुए। नाटकों मैं तो उन्होंने युगांतर उपस्थित कर दिया। भारतेंदु मृदु संशोधक। निपुण वैद्य की भांति परिस्थिति के अनुसार व्यवस्था की। वे जीवन प्राणधारा के मूर्त विग्रह थे। इन्हीं महान गुणों के कारण भारतीय इंदु को अपने युग का महा नेता बना दिया।

संदर्भ सूची

1. डॉक्टर नगेंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, मयूर बुक्स, 2020, पृष्ठ 437
2. डॉक्टर नगेंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, मयूर बुक्स, 2020, पृष्ठ 439
3. डॉक्टर गंगा सहाय 'प्रेमी, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र– एक विशेष अध्ययन, हरीश विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2020, पृष्ठ 1–3
4. डॉक्टर गंगा सहाय 'प्रेमी, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र– एक विशेष अध्ययन, हरीश विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2020, पृष्ठ 4–5
5. डॉक्टर नगेंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, मयूर बुक्स, 2020, पृष्ठ 441
6. डॉक्टर ओकेंद्र, आधुनिक हिंदी गद्य साहित्य में 'भारतेंदु–युग', जर्नल ऑफ एडवांसेज एंड स्कॉलरली रिसर्चएस इन एलाइड एजुकेशन, वॉल्यूम 16, इश्यू नम्बर 5, 2019, पृष्ठ 46